"वैरागी"

• दुबिधा न पड़उ – हरि बिन होर न पूजउ – मड़े मसाण न जाई । त्रिसना राच न पर घर जावा – त्रिसना नाम बुझाई । घर भीतर घर गुरू दिखाइआ – सहज रते मन भाई । तू आपे दाना आपे बीना – तू देवह मत साई । मन वैराग रतउ वैरागी – सबद मन बेधिआ मेरी माई । अंतर जोत निरंतर बाणी – साचे साहिब सिउ लिव लाई । असंख वैरागी कहह वैराग – सो बैरागी जि खसमे भावे । हिरदे सबद सदा भै रचिआ – गुर की

कार कमावै । आस निरास रहै बैरागी – निज घर ताड़ी लाई । भिखिआ नाम रजे संतोखी – अम्रित सहज पीआई । दुबिधा विच बैराग न होवी – जब लगु दूजी राई । सभ जग तेरा तू एको दाता – अवर न दूजा भाई । मनमुख जंत दुख सदा निवासी – गुरमुख दे वडिआई । अपर अपार अगम अगोचर – कहणै कीम न पाई । (1-634)

(पाठी माँ साहिबा)